वसंत भाग 2

‘कठपुतली’

कठपुतली/Puppet

कवि का जीवन परिचय

हिंदी भाषा के महान लेखक ‘श्री भवानी प्रसाद मिश्र’ का जन्म 29 मार्च सन् 1913 को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के टिगरिया गाँव में हुआ। वे कविता, निबंध, संस्मरण और बाल साहित्य लेखन में निपुण थे। इनकी प्रमुख रचनाओं में गीत फ़रोश, बुनी हुई रस्सी, नीली रेखा तक, मानसरोवर, अनाम तुम आते हो, त्रिकाल संध्या, चकित है दु:ख और अन्धेरी कविताएँ आदि प्रमुख हैं। उन्हें ‘साहित्य अकादमी पुरस्कार’ और ‘पद्मश्री’ सम्मान से भी नवाजा गया। वे गाँधीवादी विचारधारा के थे। **20** फरवरी, **1985** ई. को उनका देहावसान हो गया।

कविता का संदर्भ

संदर्भित कविता का संबंध हमारी पाठ्यपुस्तक वसंत भाग-2 के चौथे पाठ ‘कठपुतली’ से है। इस पाठ/कविता के रचनाकार/कवि ‘भवानी प्रसाद मिश्र’ हैं।

कविता का प्रसंग

'कठपुतली' नामक इस कविता में कवि 'भवानी प्रसाद मिश्र' कठपुतली (डोरे से बाँधकर नचाई जानेवाली काठ की पुतली/गुड़िया) के माध्यम से व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे भावों पर ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। यहाँ पर कवि निर्जीव और अविवेकी वस्तु (लकड़ी की गुड़िया) के माध्यम से सजीव और विवेकी (मनुष्य) जीवों को सन्देश देना चाहते हैं कि, स्वतंत्रता ही एक ऐसी वस्तु है जिसके लिए हमें हर तरह का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि पराधीन रहकर स्वयं के जीवन का कोई महत्व नहीं रह जाता है।

कविता का सारांश

कठपुतली कविता में कवि ‘भवानी प्रसाद मिश्र’ ने कठपुतलियों के मन की व्यथा को दर्शाया है। ये सभी धागों में बंधे–बंधे परेशान हो चुकी हैं और इन्हें दूसरों के इशारों पर नाचने में दुख होता है। सदियों से धागे में बंधी और दूसरों के इशारे पर नाचती कठपुतली को क्रोध आ जाता है। वह इन धागों को तोड़कर आजाद होना चाहती है, अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। उसकी बात सुनकर अन्य कठपुतलियाँ भी आजाद होने के लिए बेचैन हो उठती हैं। सबके मन में अपनी मर्जी के अनुसार काम करने की इच्छा जाग उठती है और सब विद्रोह के लिए तैयार होने लगती हैं।

अपनी बात का यह परिणाम देखकर पहली कठपुतली सोच में पड़ जाती है। सबकी स्वतंत्रता की जिम्मेदारी जब उसके कन्धों पर आती है तो वह सोचने लगती है कि इस इच्छा का क्या परिणाम होगा? क्या वह अपनी स्वतंत्रता को संभाल पाएँगी? अपने पैरों पर खड़ी रह पाएँगी? अन्य कठपुतलियाँ आजादी का सही उपयोग कर सकेंगी? इस प्रकार की बातें सोचकर वह शांत हो जाती है। फलस्वरूप पहली कठपुतली सोच–समझकर कोई कदम उठाना जरुरी समझती है।